धर्म, राजनीती और रहबर-ए-हिन्द रायबहादुर सर छोटू राम जी

(1906 की सभा में उनके द्वारा दिया गया ऐतिहासिक भाषण)

जब 1905 में जाट महासभा का गठन हुआ, तो धार्मिक ठेकेदारों ने इसका पुरजोर विरोध किया था। इस पर चौ. छोटूराम ने अपने भाषण में इस प्रकार कहा :

जब हम अपनी कौम के लिए एक संगठन बनाने की बात करते हैं, तो सबसे पहले आर्यसमाजी हैं, जिनका कहना है कि आर्य समाज इस प्रकार का जाति भेद वेदों और महर्षि दयानंद के सिद्धांतों के विरुद्ध है। इसके बाद सिखों की आपत्ति है कि जाट गैर जाट का भेद पंथ के खिलाफ है और जाट सभा का गठन सिखों का विभाजन करने के लिए किया जा रहा है। मौलवियों ने दलील दी कि इस प्रकार की विभाजन रेखा खींचना कुरान के नियमों के खिलाफ है और यह केवल मुसलमानों को कमजोर करने के लिए किया जा रहा है। इन शिकायतों पर मैं बहुत गहरे चिंतन के बाद कहना चाहता हूं कि धर्म किसी व्यक्ति का अपना एक निजी मामला है, किसी को भी यह पूर्ण आजादी है कि वह किसी भी धर्म को अपनाए, लेकिन कोई भी धर्म न तो किसी व्यक्ति को या समाज को उसे अपने अधिकारों के लिए रोकने की नसीहत देता है, न ही बगैर कमाए खाने की। मेरा कहना है कि हम यह बात साफ कर देना चाहते है कि हम ऐसी किसी भी स्थिति में कोई समझौता नहीं करेंगे, जहां हिंदू, मुसलमान, सिख और ईसाई, धर्म के नाम से हमें पुश्तैनी दास मानते हैं अथवा दासों की भांति हमारे साथ वर्ताव करते हैं। हम न ही उनके इस तथाकथित अधिकार को मानेंगे कि वे हिंदू, सिख, मुसलमान और ईसाई जाटों को पशुओं की तरह किसी भी धार्मिक कार्यक्रम में अर्थात अन्य क्रियाकलापों में अपनी मर्जी के मुताबिक जब चाहें और जहां चाहें हमें हांक ले जाएं। हम ऐसी भेड़चाल में सम्मिलित होने वाले नहीं हैं। हम ऐसे धार्मिक आक्रमण को किसी कीमत पर सहन नहीं करेंगे। हम अपने तौर-तरीकों से सभी धर्मों और उनके गुरुओं, पीर-पैगंबरों, ऋषि-मुनियों और देवी देवताओं को सम्मान देते रहेंगे।

जाति और धर्म के कारण भेद का बहाना करना, जिस तरह हिंदू धर्म के सुधारक जैसे आर्य समाज और इसी प्रकार दूसरे भी जैसे मुसलमानों और सिख ये कहते हैं कि जातिवाद एक अभिशाप है और इस अभिशाप को कबीला संस्था जीवित रखे हुए है। इस बात को सभी मानेंगे कि जातिवाद और जन्म भेद, जहां तक उनका संबंध धर्म और आध्यात्म से है, बिल्कुल भिन्न है। हमें इन शब्दों के अर्थों को गंभीरता और बारीकी से समझने का प्रयास करना चाहिए, न कि भावुकता में बहकर तिनके की तरह हवा में उड़ते हुए रहना चाहिए। इसका अर्थ यह है कि कोई भी व्यक्ति किसी खास परिवार या धर्म में जन्म लेने से महान नहीं बन

जाता और न ही जन्म के आधार पर किसी को स्वर्ग में स्थान मिलने वाला है। ऐसा बिल्कुल नहीं है कि कोई धर्म के आधार पर अपने आध्यात्मिक दृष्टिकोण से स्वर्ग पाने वाला है। कर्मों की गुणात्मक दृष्टि से ही अच्छों को ईनाम और बुरों को सजा मिलती है, न कि धर्म के आधार पर। ये कहना भी पूरी तरह गलत है कि जन्म, जाति के संबंधों को स्वीकार करना और उन्हें महत्व देना आध्यात्मिक अर्थात धार्मिक मान्यताओं, मर्यादाओं और आदेशों के विरुद्ध है। यूरोप का ईसाई समुदाय स्वयं को एंग्लो-सेक्शन, नोर्दिन्स, लैटिन्स आदि कहने में कोई शर्म महसूस नहीं करते। एशिया का मुस्लिम समुदाय खुद को तुर्क, अरब और अफगान कहता है। जब इस पर किसी को आपत्ति नहीं, तो फिर जाट को जाट कहने में किसी को आपत्ति और शर्म महसूस क्यों हो?

मैं यह कहना चाहता हूं कि हमारी जाट कौम गहरी नींद में अर्थात अज्ञानता, अकर्मठता में डूबी है, उसे जो चाहे धर्म के नाम पर पहले लूटता है, फिर गंवार कहकर बदनाम करता है। अशिक्षित और गरीब जाट इसे समझने का प्रयास करता है तो यह धर्म के ठेकेदार दु:खी, चिंतित और विचलित हो जाते हैं। इसलिए इन्हें नींद में रखने के लिए धर्म का षडयंत्र रचते हुए इनके साथ भेड़-बकरियों की तरह वर्ताव करते रहने और इनकी जुबानों और दिमाग को धर्म की नशीली खुराक देकर बंद कर देने का षडयंत्र रचते हैं क्योंकि वे डरे हुए हैं कि यदि जाट जाग गए, तो उनमें बदले की भावना आ सकती है। धार्मिक निहित स्वार्थों के तहत अपना राजनीतिक स्वार्थ पूरा करते हैं। इस तरह के राजनेताओं और उनकी पार्टियों में वास्तव में न तो कोई सेवा भाव होता है और न ही आध्यात्मिक भावना। ऐसे लोगों का स्वार्थ केवल और केवल हमें धर्म की घुट्टी पिलाकर अपना स्वार्थ साधने तक सीमित होता है। भगवान का मुखौटा लगाए हुए ये शैतान बेचैन रहते हैं। आज हम जाटों को सच्चे भगवान और सच्चे गुरुओं की पहचान करनी होगी।

हमारा किसी से झगड़ा नहीं है। हम सभी धर्मों का आदर करते हैं। किसी के धार्मिक मामलों में दखल नहीं देते। लेकिन फिर ये धर्म का चोला पहनकर धर्म के नाम से हमारी राजनीति में दखल क्यों देते हैं? यह अधिकार इन्हें किसने दिया है? हम इन धार्मिक कट्टरपंथियों से दूर रहना चाहते हैं। हमारी राजनीति में धर्म के नाम पर गुमराह करने वालों के लिए कोई स्थान नहीं है। फिर भी ये हमारे अंदर स्थान ढूंढने का भरसक प्रयास करते रहते हैं। हमारा समुदाय पिछड़ा हुआ है, हम हमारी बिरादरी को आर्थिक और शैक्षणिक स्तर को सुधारना चाहते हैं। ऐसा करने के लिए धर्म की आवश्यकता कहां पड़ गई है?

धर्म के क्षेत्र और इसकी सीमाओं को हम अच्छी तरह समझते हैं। हम इन सीमाओं के भीतर धर्म को पूरा सम्मान देते रहेंगे, लेकिन धर्म की आड़ में हमारी सीमाओं को सील करने की इजाजत कभी नहीं देंगे। ये लोग धर्म के नाम से हमें मूर्ख बनाकर उल्लू सीधा करना चाहते हैं और ये चाहते हैं कि धर्म के नाम पर हमारे समुदाय को इसमें उलझाए रखें ताकि हमारी समस्याओं से हमारा ध्यान हटा रहे। लेकिन इनका हम

हर कदम, हर पल मुंह तोड़ जवाब देते रहेंगे, लेकिन कभी भी इन धर्म के ठेकेदारों को हमारी राजनीति में दखल देने की इजाजत नहीं देंगे। हम हमारी दूसरी पिछड़ी जातियों तथा दलित जातियों के साथ पूरी हमदर्दी रखेंगे क्योंकि वे सभी हमारी तरह ही शोषित हैं। हमारे कष्ट सभी के समान हैं, चाहे धर्म किसी का कुछ भी हो।

मैं यह जोर देकर कहना चाहता हूं कि सांसारिक मामलों में जन्म और खून के रिश्तों को हम मजबूत, ठोस एवं पवित्र संबंध और बंधन मानते हैं और यह हमारा प्राकृतिक अधिकार है और हमारे इस अधिकार को छीनने का किसी को भी अधिकार नहीं है, चाहे वह अपने आप को धार्मिक तौर पर किसी भी पायदान पर बैठा समझता हो।

हमने ये माना मजहब जान है इंसान की,

कुछ इसके दम से कायम है शान इंसान की।

रंगे कौमियत मगर इससे बदल सकता नहीं,

खून आबाए रंग तन से निकल सकता नहीं।।

सौजन्य: पूर्व कमांडेंट हवा सिंह सांगवान